पी.एम. श्री विद्यालयों की गतिविधियां (राजस्थान के सन्दर्भ में)

लेखक : डॉ. मनोज गुप्ता

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

पी.एम. श्री विद्यालयों की गतिविधियां (राजस्थान के सन्दर्भ में)

मॉड्यूल लेखन के उद्देश्य:

1.इस माड्यूल को पढ़कर पाठक / संस्थाप्रधान पीएम श्री विद्यालयों के विषय में अपनी समझ बना सकेंगे।

2. पी.एम. श्री विद्यालयों की शुरुआत के पीछे निहित उद्देश्यों एवं अपेक्षाओं को जान सकेंगे।

3. पी.एम. श्री विद्यालयों के चयन के मध्यनजर NEP 2020 के परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे।

4. पी.एम.श्री विद्यालयों के छह पिलर्स को जान सकेंगे।

5. पी.एम.श्री विद्यालयों की प्रमुख गतिविधियों को समझ सकेंगे।

आइए हम उक्त उद्देश्यों के मध्य नजर पीएम श्री विद्यालयों को सम्यक प्रकार से समझने का प्रयास करते हैं..

1.' पीएम श्री विद्यालय क्या?

गत दो सत्रों से विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में एक नया नाम उभरा है, वह है पीएम श्री' विद्यालय। अंग्रेजी में इसे 'PMSHRI SCHOOLS' कहा गया है। यह PRADHAN MANTRI SHOOLS FOR RISING INDIA का संक्षिप्तिकरण है। देशभर में कुल 14,500 पीएम श्री विद्यालय खोले जाने हैं। वर्तमान में राजस्थान में कुल 402 पीएम श्री विद्यालय हैं, जिन्हें मिशन मोड में विकसित किया जा रहा है। पीएम श्री विद्यालय वस्तुतः नए नहीं खोले जा रहे हैं, अपितु ब्लॉक स्तर पर पहले से ही जो विद्यालय हैं, चाहे वे रा.उ.प्रा.वि. हो या राउमावि, जिनमें आधारभूत ढाँचा एवं नामांकन तुलनात्मक रूप से ज्यादा है तथा जिनमें विकास और सुधार की संभावनाएँ हैं, उन्हें ही pm श्री के रूप में 'विकसित किया जा रहा है। सरकारी विद्यालयों को पीएम श्री में परिवर्तित करने की शुरुआत 2022 से हुई है। इन्हें शुरु हुए महज दो सत्र हुए हैं। पीएम श्री विद्यालयों के शुरुआत के पीछे जो मूल धारणा है वह यह कि देशभर में ऐसे विद्यालय स्थापित हों जो नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के क्रियान्वयन हेतु 'LIGHT HOUSE' हों तथा अन्य विद्यालयों के लिए उदाहरण बन सकें।

2 पीएम श्री विद्यालयों की स्थापना के उद्देश्य

कोई भी योजना की शुरुआत निरुद्देश्य नहीं होती है। लक्ष्य या उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ही नई योजना या स्कीम शुरु होती है। यहाँ हमें जान लेना आवश्यक है कि पीएम श्री विद्यालयों की स्थापना क्यों हुई? क्या आवश्यकता थी इन्हें शुरू करने की! वास्तव में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 में लागू हुई। NEP के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एवं उसकी क्रियान्विति के बेहतर स्वरूप को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से देशभर में पीएम श्री विद्यालय चरणवार स्थापित किए जा रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो पीएम श्री विद्यालय वे विद्यालय होंगे जो नई शिक्षा नीति को व्यवहार रूप में क्रियान्वित करने के सबसे श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में होंगे। ये विद्यालय अन्य सरकारी विद्यालयों के लिए आदर्श, मानक या मॉडल के रूप में होंगे। शैक्षिक गतिविधियों, उपलब्ध संसाधनों, सुविधाओं आदि की दृष्टि से PM श्री विद्यालय बेहतर नवाचार करेंगे, ताकि इनसे प्रेरित और प्रभावित होकर अन्य विद्यालय इनका अनुकरण और अनुसरण कर सकेंगे।

विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में पीएम श्री विद्यालयों को इस उद्देश्य से स्थापित किया गया ताकि इनमें शैक्षणिक नवाचार ऐसे हों जो अन्य विद्यालयों के लिए एक तरह से मानक का काम करें। ये विद्यालय भारत सरकार द्वारा शिक्षा क्षेत्र की ऐसी पहल है जो शिक्षा प्रणाली को बदल सके। सार संक्षेप में हम पीएम श्री विद्यालयों की स्थापना के निम्नलिखित उद्देश्य मान सकते हैं-

- NEP 2020 को मानक रूप में लागू करना
- शैक्षिक गतिविधियों में नवाचार के नए मानक स्थापित करना
- अन्य विद्यालयों के लिए प्रेरक बनना
- आनन्ददायी, समानता और समता, समन्वयन एवं उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षण उपलब्ध करवाना
- विद्यार्थियों को एक ऐसे नागरिक के रूप में तैयार करना जो देश के विकास में योगदान दे सकें।
- विद्यार्थियों को इस तरह के अवसर उपलब्ध करवाना कि वे सक्रिय एवं उत्पादक कार्य करें।
- देश भर में 14500 विद्यालयों का चयन

3. नई शिक्षा नीति 2020 एवं आरटीई

यह विदित है कि शिक्षा का अधिकार (Rite to Education) 2009 अधिनियम बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है। यह अधिकार 6 से 14 उम्र तक के बच्चों के लिए है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 का मुख्य उद्देश्य यह है कि कि बिना किसी भेदभाव और पृष्ठभूमि को देखे हरेक बच्चे को समान रूप से शिक्षा मिले और यह शिक्षा गुणवत्तापूर्ण हो।

हम कह सकते हैं कि RTE सभी को शिक्षा का अधिकार देश भर के 6 से 14 उम्र के समस्त बच्चों को बिना किसी भेदभाव के अनिवार्य, निःशुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार देता है। वहीं नई शिक्षा नीति 2020 विद्यालयों में सुधार का ढांचा उपलब्ध करवाती है। अतः हम कह सकते हैं कि PM श्री विद्यालय योजना आर-टी.ई. एवं एन.ई.पी, 2020 के आधार पर भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्तापूर्ण परिवर्तन की साकार परिकल्पना है।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक ऐसे साँचे में परिवर्तित करना चाहती है जिससे बालक 21वीं सदी की आवश्यकताओं के हिसाब से तैयार हो। नई शिक्षा नीति का यह लक्ष्य है कि वह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समग्र और बहु अनुशासनात्मक बना सके। शैक्षिक परिदृश्य इस तरह का तैयार हो जो विद्यार्थियों को चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों से जूझने के लिए मदद करे। विभिन्न समस्याओं का समाधान यह स्वयं कर सके। (NEP 2020 पृ14) नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों में विविध जीवन कौशलों का विकास करने के लिए भी प्रतिबद्ध है। विद्यार्थियों के साथ-साथ एन-ई.पी . संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमताओं के विकास पर भी बल देती है। क्योंकि विद्यालय प्रधान का स्वयं का जब तक क्षमता संवर्धन नहीं होगा तब तक वह उपलब्ध मानवीय और भौतिक संसाधनों का भी बेहतर उपयोग नहीं कर सकेगा, ना ही वह विद्यालय को NEP 2020 की मैशा के अनुरूप विकसित कर आगे बढ़ा सकेगा। इसलिए NEP की मंशा के अनुरूप पीएम श्री विद्यालयों के संस्था प्रधानों का क्षमता संवर्धन भी किया जाना अपेक्षित है।

4. पीएम श्री विद्यालयों के छह पिलर्स

यह उल्लेखनीय है कि पी एम श्री विद्यालयों के छह स्तंभ है जो एनईपी 2020 से सम्यक प्रकार से संरेखित एवं सहसंबद्ध है। ये छह स्तंभ (पिलर्स) निम्नानुरूप हैं-

1. पाठ्यचर्या, शिक्षण प्रविधि एवं मूल्यांकन (यह NEP के 1, 2, 4 व 23 चैप्टर से सम्बद्ध है।
2. सुगम एवं पर्याप्त आधारभूत संरचना (यह NEPके 3 एवं 7 वे चैप्टर से संबंधित है)
3. मानव संसाधन एवं विद्यालय नेतृत्व (यह NEPके 5वें एवम् 15 से जुड़ा है)
4. लैंगिक समता एवं समावेशी अभ्यास (यह NEP के चतुर्थ एवं छठे अध्याय से जुड़ा हुआ है।)
5. प्रबन्धन, निगरानी एवं सुशासन (यह स्तंभ NEP के आठवें अध्याय से संरेखित है।)
6. लाभार्थी सन्तुष्टि (यह स्तंभ भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आठवें चैप्टर से संबंधित है।)

यहाँ प्रत्येक स्तंभ पर विस्तार से मगर सारपूर्ण ढंग से प्रकाश डालना अपेक्षित है..

1. प्रथम स्तंभ: पाठ्यचर्या, शिक्षण प्रविधी एवं मूल्याकन-

एन.ई.पी बहु आवश्यकता पर व्यापकता से चर्चा करती है। यह बहु अनुशासनात्मक एवं समग्र शिक्षा पर बल देती है। पीएम श्री विद्यालयों में भी इनईपी की इसी भावना को आधार बनाकर प्रथम स्तंभ में पाठ्यचर्या और शिक्षण प्रविधियों में एक तरह से नवीनता, व्यापकता एवं ताजगी है। प्रथम स्तंभ कला के साथ खेलकूद आधारित प्रविधि एवं व्यापक शैक्षिक परिवेश पर आधारित है। इतना ही नहीं पीएम श्री के इस प्रथम स्तंभ में एनईपी के पैरा 4.6 के, आधार पर अनुभवात्मक अधिगम पर बहुत बल दिया गया है। पीएम श्री विद्यालयों की शिक्षण प्रविधियों में इस बात पर बहुत आग्रह है कि शिक्षण के तरीके खेल और खिलौने आधारित, कहानी कहने, अनुभवात्मक और रिफ्लेक्शन आधारित हो। साथ ही साथ इस स्तंभ में इस बात पर भी बल है कि अधिगम प्रक्रिया तकनीकि से समन्वित हो। तकनीकि को सुदृढ़ करने के लिए डिजिटल टूल्स को संसाधनों के रूप में इस्तेमाल करने की अपेक्षा की गई है

दरअसल पीएम श्री विद्यालयों का यह पहला स्तंभ परम्परागत और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के समन्वय पर बल देता है। रटने और उबाऊ पद्धति के स्थान पर चिन्तनपरक, समझ आधारित, रचनात्मक, संवादपरक तरीकों पर आग्रह है। संपादपरक गतिविधियों के लिए यहाँ यह सुझाया गया है कि विद्यार्थियों के संवादपरक कौशलों के निकसित करने या उन्हें पर्याप्त अवसर देने के लिए वाद-विवाद और उद्घोषणा जैसी गतिविधियों होनी चाहिए।

पर्यावरण शिक्षा को महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में समाविष्ट करने पर भी बल दिया गया है। 'इको क्लब' के गठन और क्रियान्वयन की गतिविधि का संचालन इसी मंशा के अनुरूप पीएम श्री विद्यालयों में हो रहा है।

एन.ई.पी 2020 के पैराग्राफ 4.34 के मद्देनजर यह पिलर इस बात की भी वकालत करता है कि शिक्षण व्यवस्था में मूल्यांकन की पद्तीयों में भी बदलाव और सुधार किया जाना अपेक्षित है। मूल्यांकन अधिक रचनात्मक, दक्षता आधारित हो। पीएम श्री विद्यालयों के फ्रेमवर्क की गाइडलाइन के प्रथम भाग में पृष्ठ 44 पर साफ-साफ कहा गया है कि मूल्यांकन सीखने के लिए', 'सीखने के द्वारा और सीखने का होना चाहिए। इसे तीन पैरा में'• Assessment of learning, Assessment for learning and Assessment as learning. किया गया है।

प्रथम' पिलर में मूल्यांकन के विविध उपकरण निम्नलिखित बताए गए हैं- अवलोकन, प्रश्नावली, रोल प्ले, संश्लेषण स्व मूल्यांकन, जांच सूची, अवधारणा नक्शे, साक्षात्कार, क्विज, पोर्टफोलियों, साथियों द्वारा मूल्याकन, केस स्टडी, एंट्री एंड एक्जिट कार्ड आदि। मूल्यांकन पद्दती में फीडबैक प्रविधि को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

द्वितीय स्तम्भः पहुँच और बुनियादी अवसंरचना

पीएम श्री विद्यालयों में सुगम और सभी बच्चों की पहुंच वाले आधारभूत संरचना पर बल दिया गया है। यह स्तम्भ NEP 2020 के 7,16, एवं 23वें अध्याय से सम्वद्ध है। इस स्तंभ में इस बात पर बल दिया गया है कि समस्त सुविधाओं के साथ अत्याधुनिक बुनियादी ढाँचा हो। यह ढाँचा सभी छात्रों के लिए सुगम होने के साथ साथ समावेशी भी होना चाहिए। इस ढाँचे पर बल देने के पीछे यह मंशा महत्त्वपूर्ण रही है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के ढाँचे में बहुत अन्तर नहीं होना चाहिए। जो अब तक विभाजनकारी अन्तर था उसे पाटा जाना चाहिए।

विद्यालय की आधारभूत सुविधाएँ इस तरह की होनी चाहिए कि हरेक विद्यार्थी उन सुविधाओं तक बाधा मुक्त होकर पहुँच बना सके। उच्च गति के इंटरनेट युक्त कक्षाओं और डिजिटल डिवाइस की अपेक्षा भी की गई है।

तृतीय स्तंभ : विद्यालय में मानव संसाधन

पीएम श्री विद्यालयों में प्रशिक्षित एवं कुशल शिक्षकों का होना अपेक्षित है। इन विद्यालयों में शिक्षक ऐसे होंगे जिन्हें अपने कार्य में पेशेवर कुशलता अर्जित हो । शिक्षकों का संवर्ग ऐसा होना वांछित है जो दल भावना के साथ विद्यालय को गतिशील रखकर उसे नई ऊँचाइयों पर पहुँचाएँ। शिक्षकों के साथ-साथ संस्था प्रधान की भूमिका एवं नेतृत्व भी अधिक प्रभावी एवं सक्रिय होगा जो स्टाफ के साथ समग्र रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करेंगे। शिक्षक नवाचारों के लिए स्वयं को सदा तैयार रखने वाले और नेतृत्व क्षमता का विकास करने वाले होंगे। एन ई पी 2020 के आधार पर पीएम श्री विद्यालयों के शिक्षकों का समय समय पर प्रशिक्षण सुनिश्चित होगा। शिक्षक परस्पर अपने अनुभव भी साझा करेंगे। शिक्षा शास्त्र में इन्हें प्रशिक्षित किया जाएगा। कुल मिलाकर तीसरे स्तंभ में ऐसे मानव संसाधन की बात की गई है जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं के हिसाब से अपने को तैयार एवम् अद्यतन रख सकें ।

चतुर्थ स्तम्भ: समावेशी प्रथाएँ एवं लैंगिक समानता

पीएम श्री विद्यालयों में समावेशी शिक्षा प्रणाओं को बढ़ावा देने की अपेक्षा की गई है। यहाँ बालक बालिकाओ में बिना किसी भेदभाव और पृष्ठभूमि से कोई संबंध स्थापित नहीं करते हुए सभी को समान अवसर उपलब्ध होना सुनिश्चित होंगे।

विशेष क्षमता वाले बच्चों को मुख्य धारा में लाने के सभी सक्रिय प्रयास होंगे। एनईपी 2020 के पैरा 6.13 के संदर्भ में समस्त विशेष योग्यता (CWSN) वाले विद्यार्थियों के लिए विशेष तकनीक को चिह्नित कर उन्हें तकनीक पहुँचाई जाएगी। विविध विकलांगता की पुष्टि के लिए मानक और गुणवत्तापूर्ण परीक्षणों पर बल दिया जाएगा। समावेशी शिक्षण हेतु इन विद्यालयों में अनुकूल वातावरण बनाए जाने के विशेष प्रयास किए जाएंगे। विशेष रणनीति बनाई जावेगी। प्रतिभाशाली बच्चों को चिह्नित कर उन्हें मुख्यधारा में लाया जावेगा। जन्मजात प्रतिभा वाले बच्चों के साथ तालमेल बिठाते हुए ऐसी प्रतिभाओं को पोषित किया जावेगा।

पाँचवा स्तम्भः प्रवन्धन, मोनिटरिंग एवं प्रशासन

विद्यालयों के कामकाज में जवाबदेही सुनिश्चित करने, पारदार्शिता लाने और कार्य प्रणाली में सुधार हेतु पीएम श्री विद्यालयों में विशेष प्रयास किया जाना तय किया गया है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी पीएम श्री विद्यालयों के फ्रेमवर्क के पृष्ठ संख्या 91 से 98 में विद्यालय प्रशासन के सम्बन्ध में गाइडलाइन जारी की गई है। यह गाइडलाइन NEP के आठवें चैप्टर से जुड़ी हुई है।

आधुनिक शैक्षिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए स्वनिगरानी और संशोधित तरीकों की वकालत की गई है। इसके लिए विद्यालयों के मूल्यांकन ढाँचे को संरेखित किया गया है। पीएम श्री विद्यालयों के बेहतर प्रबन्धन के लिए समुदाय की जवाबदेही भी तय की गई है। क्योंकि मजबूत सामुदायिक भागीदारी के द्वारा ही उत्तर दायी एवं भागीदारीपूर्ण शासन संभव है। इसके लिए विशिष्ट योजना, सतत संवाद, संसाधनों के बेहतर प्रबंधन एवं निगरानी की आवश्यकता है।

विद्यालयों के बेहतर प्रबन्धन हेतु तकनीक या प्रौद्योगिकी के साथ समन्वय स्थापित किया जावेगा। गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए ICT आधारित मॉनिटरिंग सिस्टम पर बल दिया गया है ।

छठवा स्तंभः लाभार्थी संतुष्टि

पीएम श्री विद्यालयों के पाँच स्तम्भों पर जब सम्यक प्रकार से कार्य होगा तो निश्चय ही विद्यालयों से जुड़े लाभार्थी संतुष्ट होंगे। विद्यालयों में जब सीखने का माहौल गुणवत्तापूर्ण होगा तो विद्यार्थी, अभिभावक और शिक्षक सभी संतुष्ट होंगे। इस संतुष्टि के लिए संस्थाप्रधान की भूमिका दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ बेहतर नेतृत्व की होगी। सुव्यवस्थित बुनियादी ढाँचे के माध्यम से छात्रों का समग्र विकास होगा और पर्यावरण पर जोर रहेगा।
छोटे-छोटे सुधारों के लिए शिक्षा मंत्रालय के मंच' विद्या अमृत पर भी काम होगा, जो शैक्षिक नवाचार और सूक्ष्म सुधारों का पोषण करता है। इसमें स्कूल प्रबन्धन समितियों के माध्यम से हरित नीति का पालन होगा तथा समुदाय के साथ सतत संवाद एवं सहभागिता होगी।

5. पीएम श्री विद्यालयों में की जानी वाली प्रमुख गतिविधियाँ -
जैसा कि हम सब जानते हैं कि पीएम श्री विद्यालय NEP 2020 के अनुसार आदर्श और मानक रूप से चलने वाले उत्कृष्ट विद्यालय होंगे। ये विद्यालय NEP 2020 के क्रियान्वयन के लिए न केवल शौ केस होंगे अपितु गुणवत्तापूर्ण और 21वीं सदी की शिक्षा के लिए अन्य विद्यालयों के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरक भी होंगे। इसी मंशा को ध्यान में रखते हुए राजस्थान के समस्त 402 पीएम श्री विद्यालयों के लिए राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, शिक्षा संकुल द्वारा लगातार विभिन्न गतिविधियों आयोजित किए जाने हेतु दिशा निर्देश जारी किए जा रहे हैं।
यहाँ रा.स्कूल शिक्षा परिषद की ओर से जिन गतिविधियों के लिए दिशानिर्देश जारी हुए हैं उन्हें समेकित एवं सार रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. अधिगम संवर्धन कार्यक्रम Learning Enhancement Programme इस गतिविधि का उद्देश्य यह है कि कक्षा 9-12 के विद्यार्थी रटकर याद करने की समस्या को कम कर सकें । साथ ही कक्षा शिक्षण की विधियों एवं परीक्षा डिजाइन में सुधार हो । इस गतिविधि का दूसरा प्रमुख उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी बाद की कक्षाओं में बेहतर उपलब्धि के लिए बुनियादी और साक्षरता कौशल को बढ़ावा दे सकें। तीसरा उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी स्कूल में हासिल की गई क्षमताओं के माध्यम से वास्तविक दुनियों की परिस्थितियों में उन दक्षताओं का उपयोग इस तरह कर सकें कि वे अपने आप को 21वीं सदी की विविध चुनौतियों के लिए तैयार कर सकें। LEP गतिविधि का चतुर्थ उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी अपने साथियों और शिक्षक सलाहकार के माध्यम से अधिगम का विकास करें।
उक्त चारों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए रा० स्कू०शि० परिषद ने उपचारात्मक शिक्षण एवं वर्क बुक द्वारा अभ्यास से अधिगम की दो गतिविधियों हेतु विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए है, जो आदेशांक 28.11.23 के हैं। ये पृष्ठ संख्या 1 से 5 तक में उपलब्ध है ।

2. 21वीं सदी के कौशल
एनईपी 2020 ऐसी नीति पर बल देती है जो विद्यार्थियों को 21वीं सदी की विविध चुनौतियों के लिए अपने आप को तैयार कर सके । साथ ही साथ एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में अपना योगदान समाज और राष्ट्र को दे। इस हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की बात की गई है। डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप बड़ी मात्रा में उपलब्ध जानकारी को विश्लेषित और संश्लेषित कर सके। उक्त पृष्ठभूमि में 21वीं सदी के कौशल गतिविधि के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है-

* बालक भविष्य का नागरिक बनकर विभिन्न परिस्थितियों अनुरूप विविध सामाजिक गतिविधियों में अपना सहयोग कर सके।
* समाज व परिवेश में उपलब्ध विविध क्षेत्रों को समझकर अपनी रुचि के क्षेत्र में काम कर सके।
* विभिन्न संचार कौशलों के प्रति अपनी समझ विकसित कर सके।
* उच्च शिक्षा लेने के लिए आवश्यकतानुरूप अपने को तैयार कर सके
* समाज में स्वतंत्र नागरिक के रूप में रहकर तार्किकता के साथ अपने निर्णय ले सके।
* लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ समाज में रहकर सम्यक ढंग से जी सके।

21वीं सदी के कौशल इस प्रकार से निर्धारित किए गए हैं-

क्रम संख्या	**. अधिगम कौशल -**	**2. साक्षरता कौशल-**	**3. जीवन कौशल -**
1	Critical Thinking	Information	Flexibility
2	creativity	media	Leadership
3	Collaboration	Technology	Initiative
4	Communication	**-**	Productivity
5	-	**-**	Social skills

उक्त के विस्तृत निर्देश पृष्ठ 9 से 14 पर उपलब्ध हैं।

3. नागरिकता शिक्षा और नागरिकता कौशल

लोकतांत्रिक साक्षरता और जागरुकता इसके लिए महत्त्वपूर्ण घटक हैं। परिवेश की समस्याओं को सुलझाने, समझने के लिए आज का विद्यार्थी भविष्य का अच्छा नागरिक बन सके, इसके लिए नागरिकता शिक्षा और नागरिकता कौशल विकसित करने के लिए राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् ने दिशा निर्देश जारी किए हैं।

विविध परिस्थितियों में तथ्यों का विश्लेषण करने और अनेक चुनौतियों में समाधान निकालने की क्षमता विकसित की जानी अपेक्षित है। आलोचनात्मक सोच विकसित होने का कौशल पैदा करने की NEP 2020 और pm श्री विद्यालयों की ही है।

4. राष्ट्रीय आविस्कार अभियान

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान भारत सरकार की शिक्षा जगत् के लिए एक महत्त्वाकांक्षी योजना है। इसकी शुरुआत पूर्व रास्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा 9 जुलाई 2015 को को गई। इसके अन्तर्गत विज्ञान और गणित के कक्षा 9-10 के विद्यार्थियों को केन्द्र में रखा गया है। इसमें वैज्ञानिक चिन्तन विकसित करने, वैज्ञानिक गतिविधियों के विस्तार खोज, नवाचार हेतु वातावरण निर्माण किया जाता है।

पी.एम. श्री विद्यालयों में सत्र 2023-24 के तहत उक्त कार्यक्रमों और गतिविधियों का विस्तार किया गया है, जिसमें वित्तीय प्रावधान 545.84 लाख रुपये का रखा गया है। इसमें आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ निम्नानुरूप है-

1. विज्ञान सर्कल का गठन

2- गणित सर्कल का गठन

3. शैक्षिक भ्रमण - राज्य स्तर पर कक्षा 11एवम 12 हेतु

4.. राष्ट्रीय स्तर के प्रख्यात शिक्षाविद / विशेषज्ञ द्वारा मार्गदर्शन/परामर्श

5. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रख्यात शिक्षाविद) विशेषज्ञ द्वारा परामर्श

उक्त समस्त गतिविधियों के संचालन एवं क्रियान्वयन के विस्तृत निर्देश राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त डॉ. टी-शुभमंगला द्वारा जारी किए गए हैं।

5. एडोलसेन्ट प्रोग्राम फोर गर्ल्स-

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् द्वारा जारी आदेशांक 6020 दि.16.10.23 के माध्यम से इस गतिविधि में निम्नलिखित कार्य किए जाने हैं-

1. माहवारी स्वच्छता प्रबंधन

2. विद्यालय स्तर पर बालिका शिक्षा में आने वाली बाधाओं के संबंध में विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की जानी हैं।

संदर्भ : आदेशांक 6020 दि.16.10.23

6. Carrer Guidence and Counselling of students-

इसके अन्तर्गत प्रत्येक विद्यालय में प्रत्येक वर्ष विद्यार्थियों को अपने कैरियर चुनने के लिए विषय / फेकल्टी चयन हेतु विशेषज्ञों के सेशन आयोजित किए जाने होते हैं। इसके साथ-साथ विद्यार्थियों के कौशल विकास हेतु सत्र आयोजन, व्यक्तित्व विकास एवं भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारण हेतु सत्र आयोजित किए जाने हैं। कैरियर मार्गदर्शन हेतु ऑनलाइन उपलब्ध स्रोतों के संदर्भ में एक्स्प्लोर करवाना भी इस गतिविधि का उद्देश्य है। डायल फ्युचर, राजीव गाँधी करियर गाइडेंस पोर्टल; ये दो मुख्य ऑनलाइन प्लेटफार्म की जानकारी इसमें दी जानी वांछित है। विविध छात्रवृत्तियों की जानकारी भी दी जानी होती है।

7. इन्टर्नशिप

पीएम श्री विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित विविध गतिविधियों के लिए रा. स्कूल शिक्षा परिषद् की ओर से क्रमांक 7172 दि.28.11-23 को दिशानिर्देश जारी किए गए हैं। इस गतिविधि में कक्षा 11 एवम 12 के विद्यार्थियों हेतु सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान में समन्वयन हेतु विभिन्न कार्य स्थलों पर कार्य करने के अवसर प्रदान किए जाने हैं। इसे इन्टर्नशिप कहा गया है। इसका उद्देश्य यह है कि एक ओर विद्यार्थियों की विविध/ अपने क्षेत्र / सेक्टर के सम्वन्ध में समझ में वृद्धि हो साथ ही रोजगार चयन में सहायता मिले।

ऑन जॉब ट्रेनिंग दिए जाने के लिए विस्तृत निर्देश इस संबंध में उल्लेखित आदेशों में उपलब्ध है।

8. गेस्ट लेक्चर

व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत पाठ्यक्रम एवं व्यवसाय क्षेत्र की उभरती मांग के मध्य सेतु का काम करने के लिए गेस्ट लेक्चरर गतिविधि आयोजित की जानी है। इसका उद्देश्य रोजगारपरक शिक्षा के विकास के लिए दुनियाँ के वास्तविक परिदृश्य और जीवन अनुभवो में तालमेल बिठाते हुए गतिशीलता लाना है। उक्त गतिविधि का क्रियान्वयन 113 पीएम श्री विद्यालयों में किया जाना है। जिसके विस्तृत निर्देश परिषद् द्वारा जारी किए गए हैं।

9.पी.एम-श्री हरित विद्यालय

पर्यावरण के प्रति जागरुकता यूँ तो सदा से ही शिक्षा का विषय रहा है लेकिन NEP 2020 के अनुसार विद्यालयों को पर्यावरण संरक्षण का केन्द्र बनाया जाना है। इसके माध्यम से देश को ऐसे भविष्य के नागरिक मिल सकें जो पर्यावरण के प्रति पूरी तरह सचेत, जागरूक एवं सक्रिय हों। उक्त उद्देश्य को ध्यान में रखकर पीएम श्री विद्यालयों में यह योजना पी एम श्री हरित विद्यालय' नाम से शुरू की गई है।

पीएम श्री हरित विद्यालय की मुख्य गतिविधियों में निम्नांकित प्रमुख हैं..

1. एलई.डी. लाईट का उपयोग
2. फाइव स्टार रेटिंग उपकरणों का प्रयोग जो ऊर्जा को बचावें।
3. आकाश, अग्नि, वायु, जलतत्व एवम पृथ्वी तत्व के द्वारा इन क्षेत्रों में विद्यार्थियों के समूह बनाकर विभिन्न कार्यों का क्रियान्वयन

4.कचरे की श्रेणी के अनुसार नीले' व हरे रंग के डस्टबिन का प्रयोग

5.किचन गार्डन विकसित कर विविध सब्जियों व औषधीय पौधों को विकसित करना।

6 विद्यालय में दूब व पौधरोपण करते हुए गार्डन विकसित करना

7.जनसमुदाय में स्वच्छता के प्रति चेतना व जागरुकता लाने के लिए 'स्वच्छता पखवाड़ा' आयोजित करना
8.पर्यावरण संरक्षण हेतु विशेषज्ञ द्वारा वार्ता आयोजित करना पर्यावरण के प्रति जागरुकता व समझ विकसित करने के लिए फील्ड विजिट करना।

10. 'पीएम श्री विद्यालय विकास योजना'

विद्यालयों के समग्र रुपान्तरण के लिए अच्छी भौतिक अवसंरचना, आवश्यकतानुसार संसाधन एवं सुरक्षित तथा जीवन्त वातावरण उपलब्ध करवाकर बच्चों को सीखने के विस्तृत अवसर उपलब्ध करवाना पीएम श्री विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पीएम श्री विद्यालयों के लिए विकास योजना बनाई जानी है। सामान्य विकास योजना से पीएम श्री विद्यालयों की विकास योजना इसलिए अलग है क्योंकि इस योजना के निर्माण में समुदाय / Sdmc के सदस्यों का सहयोग लिया जाना नितान्त अपेक्षित है।
विद्यालय विकास योजना के निर्माण हेतु स्थानीय उपलब्धता के आधार पर सेवानिवृत्त शिक्षक, जनप्रतिनिधि, स्वयंसेवक, दुकानदार, बैंक या एन.जी.ओ. के व्यक्तियों को शामिल किया जा सकता है। ये योजना निर्माण हेतु आमुखीकरण भी करेंगे और सहयोग भी कर सकेंगे। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, शिक्षा संकुल जयपुर द्वारा इसके विस्तृत निर्देश 7184 दिनांक 28.11.23 द्वारा प्रसारित हुए है।

समेकन

पीएम श्री विद्यालयों की स्थापना का उद्देश्य NEP 2020 की नीतियों का व्यवहार रूप में बेहतर कियान्वयन एवं अन्य विद्यालयों के लिए एक आदर्श और प्रेरक के रूप में स्थापित करना है। इन विद्यालयों के माध्यम से ऐसे विद्यार्थी तैयार हो जो एक ओर 21वीं सदी की विविध चुनौतियों से निपटने में सक्षम हो सकें, साथ ही साथ एक ऐसे नागरिक के रूप में तैयार हो जो देश और समाज के विकास में सक्रिय नागरिक के रूप में अपना योगदान दे सकें। व्यावहारिक तौर पर राजस्थान के पी एम श्री विद्यालयों में विभिन्न गतिविधियों के आयोजन के लिए यद्यपि रा० स्कूल शि. परिषद ने अनेक दिशानिर्देश जारी किए हैं, विभिन्न गतिविधियों के संचालन की अपेक्षा की है; जिनके बारे में हमने इस माड्यूल में काफी कुछ संक्षेप में कहा भी है, लेकिन यह ध्यान में रखना चाहिए कि अभी महज शुरुआत है; आगे आने वाले समय में इनमें और निखार, परिमार्जन होगा, जो NEP के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

लेखक परिचय
Dr Manoj Gupta
Principal
GSSS Pipalki Sikrai Dausa